ISSN : 2583-2948

एक कामकाजी औरत

मीना गुप्ता
एल.आई.जी. बी-4-901,
डोडाबनहल्ली, बैंगलोर – 560067 (कर्नाटक)
मो॰- +91 6305985949, 9848687095

मैं हूँ एक कामकाजी औरत, अपने सुख-दुख को स्वयं समझने वाली,
अपने हर धर्म को मैं जानती हूँ, अपने हर कर्म को बखूबी निभाती हूँ,
समाज के रिश्ते पत्नी, माँ, बहन और न जाने क्या-क्या,
उन सबका पालन भी मैं तन-मन-धन से हर समय करती हूँ,
घर-ऑफिस में सब चाहते हैं, पूरे मनोयोग से काम करूँ,
उन सबकी अपेक्षाओं पर खरी उतरते हुए काम करती भी हूँ,
कोई मेरा मददगार नहीं, है भी तो आधा-अधूरा,
पर ये सब देखकर भी मैं अनदेखा-सा कर जाती हूँ,
कोई भी मौसम हो, सुबह जल्दी उठना, रात को देर से सोना,
थकान या बीमारी में शिकन तक न लाकर मुसकाते रहना,
ऑफिस में अफसर की डाँट, घर-परिवार की ज़िम्मेदारी,
इन सबको उठाते हुए अपनी नींव की बुनियाद मज़बूत बनाती हूँ,
पति के कंधे से कंधा और कदम से कदम मिलाकर चलती हूँ,
बन सबला, मैं हर क्षेत्र में विजय परचम को लहराती हूँ,
इन सबके बाद भी अपने बैंक बैलेंस का मुझे पता नहीं होता,
बस इतना पता है – आज दाल में नमक ज़्यादा हो गया था,
मुन्नी की पसंद का खाना नहीं था, रोटी थोड़ी जल गई थी,
कोई भी मौसम हो; ऑफिस की यात्रा तीर्थयात्रा के समान करती हूँ,
कभी देर से घर लौटने पर, पति के ताने या देर से जाने पर बॉस के ताने,
ये सब भी मैं नम आँखों से नीलकंठ के समान घूँट-घूँट पीती हूँ,
बच्चों की पेरेंट्स मीटिंग, साग-भाजी खरीदना, घर के बुजुर्गों की दवा लाना,
बच्चों को होमवर्क करवाना, रिश्तेदारी निभाना ये सब भी तो मेरे ही काम हैं,
पर वाह! समाज के बदलाव के बाद भी होता इन सबमें पति का ही नाम है,
महरी के न आने का दर्द, गैस सिलेंडर बुक न होने का फर्द, ये भी मेरे हिस्से हैं,
घर के बाहर की दुनिया के अपने अलग अरमानों पर पानी फेरते किस्से हैं,
अच्छा काम होने पर ईर्ष्या भरी नज़रें, गलत काम होने पर मज़ाक उड़ाने वाली नज़रें,
ये सब भी तो इस आधुनिक बदलते समाज में नारी की दुहाई देते मेरे हिस्से आते हैं,
अपने हर दुख को मैं ही झेलती हूँ, एक साथ कई धर्मों को निभाने वाली भी मैं ही हूँ,
नारी सशक्तिकरण का एक उदाहरण बन आगे पथ बनाने वाली भी तो मैं ही हूँ, मैं ही हूँ।